दरबारीलाल कोठिया अभिनंदन ग्रंथ (फोल्डर नं. ०१२०२०)

मुख्य टाइटल

प्रकाशकीय

सम्पादकीय

विषयानुक्रम

प्रथम खंड – आशीर्वाद, शुभकामना एवं संस्मरण

शुभाशीर्वाद ---------- १

एकलब्धप्रतिष्ठ विद्वान् ---------- ३

जैन दर्शनके प्रमुख विद्वान् ---------- ३

सेवाएँ अनुपम ---------- ३

साहित्य-साधनाके लिए समर्पित-जीवन ---------- ३

जैन विद्याके अप्रतिम-मनीषी ---------- ४

जैनधर्मके मूर्धन्य विद्वान् ---------- ४

धर्मानुरागी साहित्यसेवी ---------- ४

मंगल-कामना ---------- ५

सेवाएँ बहुमूल्य ---------- ५

सच्चा मार्गदर्शन ---------- ५

जैन न्यायके अधइकारी विद्वान् ---------- ५

दिग्गज विद्वान् ---------- ६

एक सामाजिक कार्यकर्त्ता ---------- ६

विलक्षण प्रतिभाशाली ---------- ६

जैन समाजके गौरव ---------- ६

हार्दिक शुभकामना ---------- ६

मंगल-कामना ---------- ७

देशके मूर्धन्य विद्वान् ---------- ७

जैनदर्शनके प्रकांड विद्वान् ---------- ७

उच्चकोटिके विद्वान् ---------- ७

जैन न्यायके अधिकारी विद्वान् ---------- ८

तत्वज्ञानके भण्डारी ---------- ८

ज्ञानका अखण्ड दीप जलाया ---------- ८

महामनीषी ---------- ८

श्रीकोठियाजीका नैतिक कोण ---------- ९

स्मृतिके झरोखे में कोठियाजी ---------- ९

सरस्वतीपुत्र ---------- १०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कर्मठ व्यक्तित्व ---------- ११
हार्दिक सन्देश ---------- ११
समाजके मार्गदर्शक ---------- ११
प्रथम झलक ---------- १२
न्यायदिवाकर डॉ. कोठियाजी ---------- १२
महान् व्यक्तित्वके धनी ---------- १३
सादगी और सरलताकी मूर्त्ति ---------- १३
प्रेरणास्रोत ---------- १३
ज्ञाननिधि एवं वात्सल्यकोश ---------- १४
प्रेरक व्यक्तित्व ---------- १५
देर आयद दुरस्त आमद ---------- १५
गुरुणां गुरुवासरः ---------- १६
विनम्रता और सरलताके अग्रणी ---------- १६
यशस्करी विद्याके अमर उपासक ---------- १६
कितने गहरे कितने उदार ---------- १७
साहित्य-देवताके गरिमायुक्त आराधक ---------- १८
मेरे श्रद्धेय ---------- १८
एक सहृदय विद्वान् ---------- १९
नई पीढ़ीके निर्माता ---------- २०
सरलताकी प्रतिमूर्ति ---------- २०
जीवन-पथ प्रदर्शक ---------- २०
भूली विसरी यादें ---------- २१
योगदान उच्चस्तरका ---------- २२
शुभकामना ---------- २२
चतुर्मुखी प्रतिभाके धनी ---------- २२
न्यायशास्त्र-मर्मज्ञ ---------- २२
श्री दरबारीलाल कोठिया अभिनंदन है बारंबार ---------- २३
शत शत अभिनन्दन है ---------- २४
नैनागिरिके श्रमणदूत ---------- २४
ओ साहित्यिक सन्त ---------- २५
अभिनंदन कर हर्ष महान् ---------- २६
नाव लगाना पार ---------- २७
समता ममताके अनुरंजन कोठिया ---------- २७
कोठी वाले कोठिया ---------- २८
एक निस्पृह विद्वान् ---------- २८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आदर्श व्यक्तित्वके धनी ---------- २९
शत्-शत् वन्दन ---------- २९
समय शिल्पी आदर्श साधक ---------- २९
चतुर्मुखी प्रतिभाके धनी ---------- ३०
सराहनीय व्यक्तित्व ---------- ३१
संकल्पकी साकार मूर्त्ति ---------- ३१
व्यक्तित्वके धनी ---------- ३१
समर्पित विद्वान् ---------- ३१
क्षमा और और मार्दवके धनी ---------- ३२
मेरे पूज्य चाचा डॉ. कोठियाजी ---------- ३२
कष्टहरण पण्डितजी ---------- ३२
भावुक गुरुजी ---------- ३२
गुण-पारखी विद्वान् ---------- ३३
द्रोणगिरिके उत्सवोमें डॉ. कोठिया ---------- ३४
जैसा मैंने उन्हें जाना और पाया ---------- ३५
न्यायाचार्योमें अन्तिम कड़ी श्रीकोठियाजी ---------- ३६
वे न्यायाचार्य तो है ही, न्यायाधीश भी हैं – एक रोचक संस्मरण ---------- ३६
एक जागरुक व्यक्तित्व ---------- ३७
निर्लोभी डॉ. कोठियाजी ---------- ३७
युगपुरुषके प्रति ---------- ३८
प्रेरणा और स्फूर्तिके स्रोत ---------- ३९
उनका आदर्श मेरा प्रेरणास्त्रोत ---------- ४०
विद्वद् विभूति ---------- ४०
जैनदर्शनके अप्रतिम विद्वान् ---------- ४०
पण्डितजीके अनुरूपही पंडितानीजी ---------- ४१
डॉ. कोठिया पूर्ण पुरुषायुष प्राप्त करें ---------- ४२
छात्रोंके प्रति उदारभाव ---------- ४२
विद्वत्ताका सही उपयोग ---------- ४२

द्वितीय खण्ड – व्यक्तित्व एवं कृतित्व

कुलदीपक कोठियाजी ---------- ४३
नीर-क्षीरके समीकरणमें निर्भय श्वेत मराल ---------- ४८
गोलापूर्व अन्वयके आलोकमें ---------- ४९
विद्वत्जगतके चमकते हुए सितार ---------- ५३
मेरी आन्तरिक सद्भावना ---------- ५५
जैन न्यायके एकमात्र सर्वोपरि विद्वान् ---------- ५६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैनदर्शनके वरिष्ठ विद्वान् ---------- ५६
अप्रतिम प्रतिभाके धनी ---------- ५७
जैनदर्शन, न्यायके प्रकाण्ड विद्वान् ---------- ५८
चतुर्थ सक्रम एवं पूर्ण जैन न्यायाचार्य ---------- ५९
अलौकिक प्रतिभाके धनी ---------- ६०
जीवन मूल्योंके प्रति आस्थावान् ---------- ६१
समन्वयशील दार्शनिक विद्वान् ---------- ६२
जैनदर्शनके मूर्धन्य विद्वान् ---------- ६३
एक बहुरंगी व्यक्तित्व ---------- ६४
मंगलाशा ---------- ६८
मंगलकामना ---------- ६८
आस्थाका अभिनन्दन ---------- ६९
मंगल कामना ---------- ७०
वे जैन जगतके गौरव हैं ---------- ७१
अद्वितीय प्रतिभाके धनी ---------- ७२
बड़े भाई कोठियाजी ---------- ७२
अनुपम विद्वान् ---------- ७३
मेरे आद्य विद्यागुरु ---------- ७४
बहु आयामी व्यक्तित्वके धनी ---------- ७६
साहित्यिक शोधक्षेत्रमें महनीय योगदान ---------- ७७
सरल एवं स्नेही विद्वान् ---------- ७७
मूर्धन्य विद्वान् कोठियाजी ---------- ७८
जैन न्यायके अद्वितीय प्रकाण्ड पण्डित ---------- ७९
मेरी पहली मुलाकात ---------- ७९
उनका जीवन-एक खुली पुस्तक ---------- ८०
डॉ. साहबके सम्पर्कमें कैसे आया ---------- ८१
मेरे श्रद्धा-भजन ---------- ८३
उनकी मुझपर गहरी छाप ---------- ८६
निस्पृह साहित्य-समाजसेवक ---------- ८६
विनम्रताकी साकार प्रतिमूर्ति ---------- ८७
युगप्रणेता डॉ. कोठिया ---------- ८७
मेरी दृष्टिमें हमारे श्रीमान्जी ---------- ८९
जैनदर्शन और प्रमाणशास्त्र परीशीलन – समीक्षात्मक अध्ययन ---------- ९१
प्रमाण-परिक्षा ---------- ९४
जैन तर्कशास्त्रमें अनुमान-विचार (एक समीक्षण) ---------- ९५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रमाणप्रमेयकलिकाके संदर्भमें ---------- १०५
न्यायदीपिका-एक समीक्षा ---------- १०८
द्रव्यसंग्रह-एक अनुशीलन ---------- ११५
आप्त-परीक्षा – एक अध्यन ---------- ११७
समाधिमरणोत्साहदीपक-एक समीक्षा ---------- १२०
तृतीय खण्ड – धर्म, दर्शन, न्याय
धर्म
पुण्य और पापका शास्त्रीय दृष्टिकोण ---------- १२३
वर्तनाका अर्थ ---------- १२८
जीवनमें संयमका महत्त्व ---------- १३३
चरित्र का महत्त्व ---------- १३८
करुणा जीवकी एक शुभ परिणति ---------- १४०
जैन धर्म और दीक्षा ---------- १४३
धर्म-एक चिन्तन ---------- १४६
सम्यक्त्वका अमूढदृष्टि अंग-एक महत्त्वपूर्ण परीक्षण-सिद्धान्त ---------- १४८
महावीरकी धर्म-देशना ---------- १५०
वीर-शासन और उसका महत्त्व ---------- १५५
महावीरका आध्यात्मिक मार्ग ---------- १६१
महावीरका आचार धर्म ---------- १६४
भगवान महावीरकी क्षमा और अहिंसाका एक विश्लेषण ---------- १७०
भगवान महावीर और हमारा कर्त्व्य ---------- १७३
दर्शन
अनेकान्तवाद-विमर्श ---------- १७७
स्याद्वाद-विमर्श ---------- १८२
संजय वेलट्ठिपुत्त और स्याद्वाद ---------- १८५
जैन दर्शनके समन्वयवादी दृष्टिकोणकी ग्राह्यता ---------- १९३
श्रमण-संस्कृतिकी वैदिक संस्कृतिको देन ---------- १९६
डॉ. अम्बेडकरसे भेटवार्तामें अनेकान्त-चर्चा ---------- २००
जैन दर्शनमें सल्लेखना-एक अनुचिन्तन ---------- २०३
जैन दर्शनमें सर्वज्ञता ---------- २१७
अर्थाधिगम चिन्तन ---------- २२५
ज्ञापकतत्त्व-विमर्श ---------- २३०
ध्यान-विमर्श ---------- २३४
न्याय
भारतीय वाङ्मयमें अनुमान-विचार ---------- २३९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न्याय-विद्यामृत --२८१
चतुर्थ खण्ड – इतिहास और साहित्य
स्याद्वाद और वादीभसिंह -- २८७
द्रव्यसंग्रह और नेमिचन्द्र सिद्धान्तिदेव ---३१६
शासन-चतुस्त्रिंशिका और मदनकीर्ति -- ३४०
संजद पदके सम्बन्धमें अकलंकदेवका महत्त्वपूर्ण अभइमत------------------------------------३६०
९३वें सूत्रमें संजद पदका सद्भाव --- ३६३
नियमसारका ५३ वी गाथा और उसकी व्याख्या एवं अर्थपर अनुचिन्तन ---------------------३७५
अनुसंधानमें पूर्वाग्रहमुक्ति आवश्यक-कुछ प्रश्न और समाधान --------------------------------- ३७९
गुणचन्द्र मुनि कौन हैं---३९६
कौन सा कुण्डलगिरि सिद्धक्षेत्र है -- ३९८
गजपंथ तीर्थक्षेत्रका एक अतिप्राचीन उल्लेख--- ४०२
अनुसन्धानविषयक महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर -- ४०४
आचार्य कुन्दकुन्द-- ४११
आचार्य गृच्छपिच्छ --४१६
आचार्य समन्तभद्र ---४१८
पंचम खण्ड – विविध
विहारकी महान् देन-तीर्थंकर महावीर और इन्द्रभूति -- ४२३
विद्वान् और समाज -- ४२८
हमारे सांस्कृतिक गौरवका प्रतीक-अहार---४३५
आचार्य शान्तिसागरजीका समाधिमरण -- ४४१
आदर्श तपस्वी आचार्य नमिसागर --- ४५१
पूज्य वर्णीजी-महत्त्वपूर्ण संस्मरण--४५५
प्रतिभामूर्ति पं. टोडरमल --- ४६०
श्रुतपञ्चमी -- ४६२
जम्बू जिनाष्टकम् --- ४६५
दशलक्षण पर्व -- ४६६
क्षमावाणी-क्षमापर्व --- ४६८
वीर-निर्वाणपर्व-दीपावली-- ४७०
महावीर-जयन्ती --४७४
श्रीपपौराजी-जिनमन्दिरोंका अद्भुत समुच्चय --- ४७६
पावापुर--४७८
श्रमणवेलगोला और गोम्मटेश्वरका महामस्तकाभिषिक --------------------------------------- ४८०
राजगृहकी मेरी यात्रा और अनुभव-- ४८३
काश्मीरकी मेरी यात्रा और अनुभव ---४८७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बम्बई-प्रवास ---------- ४९०
परिशिष्ट ---------- ४९१
गुरुजीकी प्रवृत्तियाँ ---------- ४९५
डॉ. कोठिया-एक कुशल कार्यकर्ता ---------- ४९५
कर्तृत्व एवं व्यक्तित्व के धनी ---------- ४९६
जीवेत शरद-शतम् ---------- ४९६
सजग प्रहरी ---------- ४९७
डॉ. कोठियाकी अप्रतिम सेवाएँ ---------- ४९७
साधुमना श्री कोठियाजी ---------- ४९७
प्रगाढ़ विद्वत्ता और सौम्य व्यक्तित्वके धनी ---------- ४९७
गुरुदेवका आशीर्वाद ---------- ४९८
विनयकी जीवन्त मूर्ति ---------- ४९८
अनेकानेक मंगल-कामनाएँ ---------- ४९८
निश्चल एवं अध्ययनशील पण्डितजी ---------- ४९९
न्यायके असाधारण ज्ञाता ---------- ५००
मधुर व्यवहारके धनी ---------- ५००
मेरे फूफाजी ---------- ५००
कर्मयोगी कोठियाजी ---------- ५०१
कर्मठ विद्वान् ---------- ५०२
समाजके भूषण ---------- ५०२
जैन जगतकी अमूल्य निधि ---------- ५०२
उनका अविस्मरणीय योगदान ---------- ५०२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org